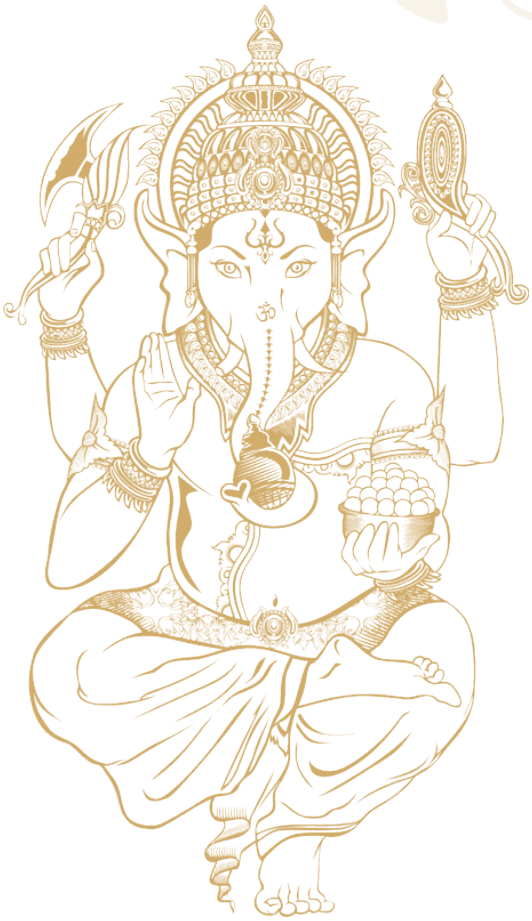

Mr.babu

08 Oct 2022

05:00 PM

Deoghar

Model: Web-MyKundli

Order No: 119671401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**08/10/2022**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**17:00:00 घंटे**
इष्ट	28:24:58 घटी
स्थान	**Deoghar**
राज्य	Jharkhand
देश	India

अक्षांश	24:31:00 उत्तर
रेखांश	86:42:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:16:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	17:16:48 घंटे
वेलान्तर	00:12:23 घंटे
साम्पातिक काल	18:25:08 घंटे
सूर्योदय	05:38:00 घंटे
सूर्यास्त	17:23:18 घंटे
दिनमान	11:45:18 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	20:59:53 कन्या
लग्न के अंश	14:20:40 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मीन - गुरु
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**पू०भाद्रपद - 4**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	वृद्धि
करण	वणिज
गण	मनुष्य
योनि	सिंह
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दी-दीपांकर
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1944	आश्विन	16
पंजाबी	संवत : 2079	आश्विन	22
बंगाली	सन् : 1429	आश्विन	21
तमिल	संवत : 2079	पुरुटासी	22
केरल	कोल्लम : 1198	कन्नी	22
नेपाली	संवत : 2079	आश्विन	22
चैत्रादि	संवत : 2079	आश्विन	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2079	आश्विन	शुक्ल 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 14
तिथि समाप्ति काल _____: 27:42:11
जन्म तिथि _____: 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 17:07:39 घंटे
जन्म योग _____: पू०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग ____: वृद्धि
योग समाप्ति काल _____: 20:53:12 घंटे
जन्म योग _____: वृद्धि
सूर्योदय कालीन करण ____: गर
करण समाप्ति काल _____: 16:30:53 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 56:47:28
भभोग _____: 57:06:37
भोग्य दशा काल _____: गुरु 0 वर्ष 1 मा 2 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

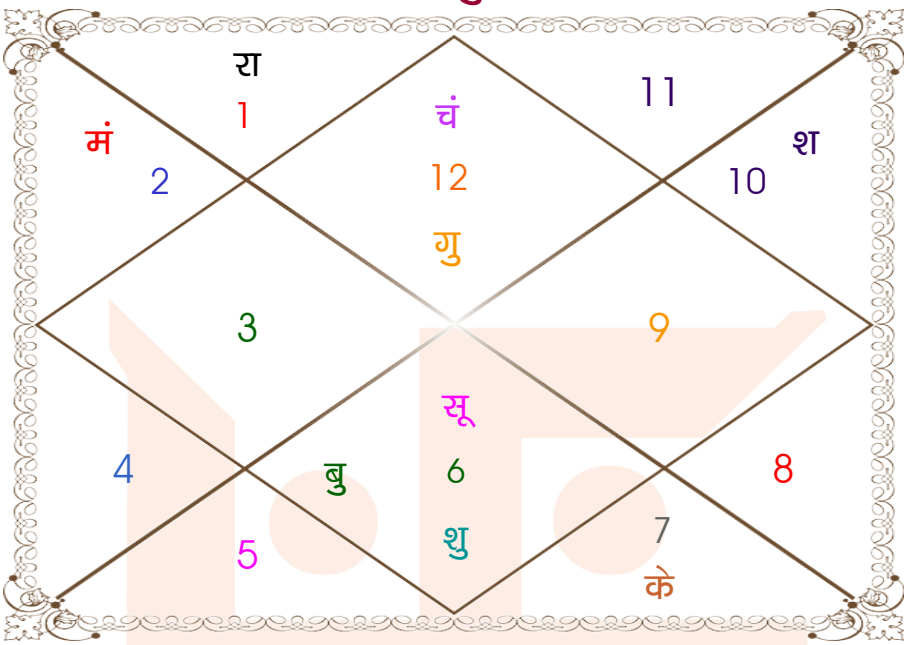

चन्द्र कुंडली

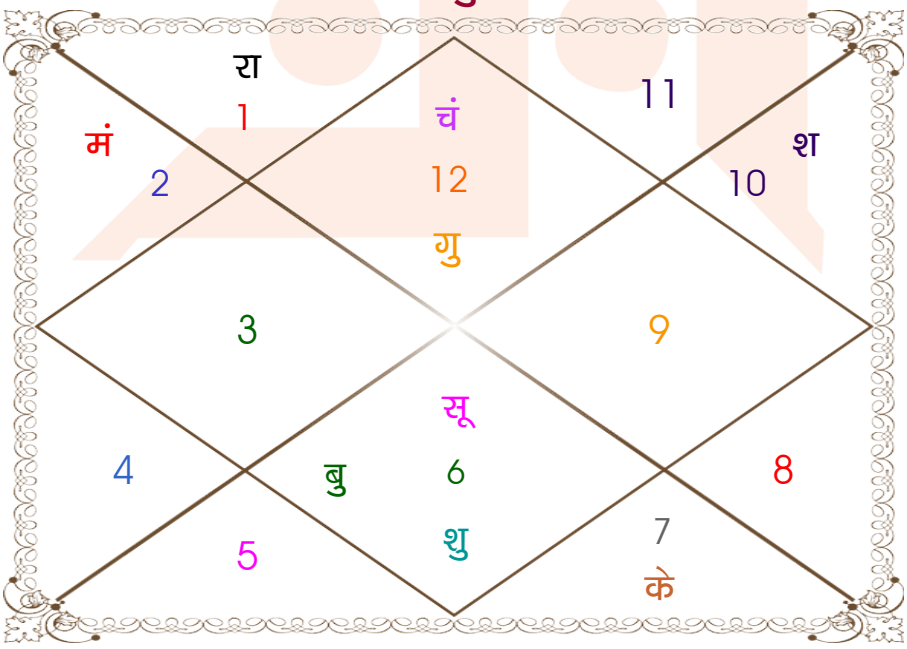

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

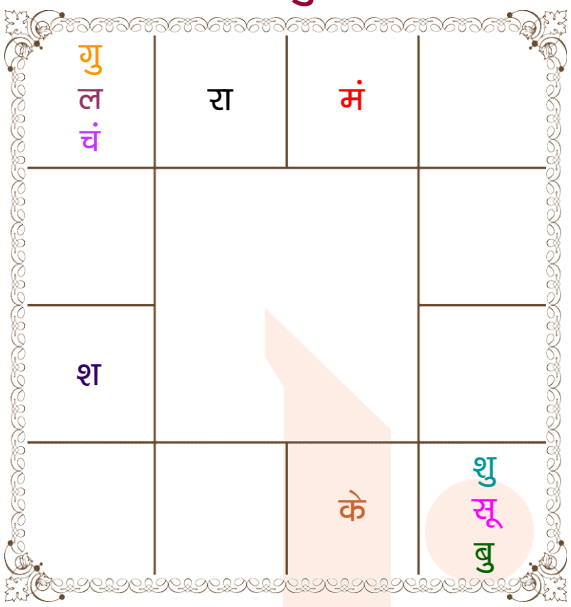

लग्न कुंडली

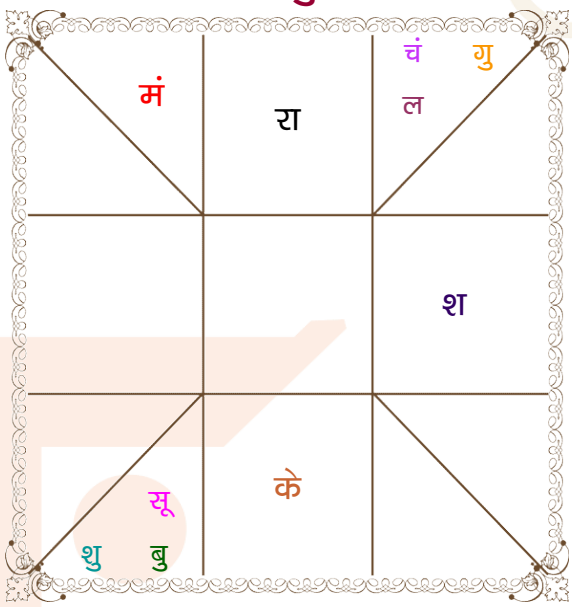

विंशोत्तरी
गुरु 0वर्ष 1मा 2दि

गुरु

08/10/2022

11/11/2126

गुरु	10/11/2022
शनि	09/11/2041
बुध	10/11/2058
केतु	09/11/2065
शुक्र	09/11/2085
सूर्य	10/11/2091
चन्द्र	10/11/2101
मंगल	10/11/2108
राहु	11/11/2126

योगिनी
भ्रामरी 0वर्ष 0मा 8दि

भद्रिका

16/10/2022

17/10/2027

भद्रिका	27/06/2023
उल्का	26/04/2024
सिद्धा	16/04/2025
संकटा	27/05/2026
मंगला	17/07/2026
पिंगला	26/10/2026
धान्या	28/03/2027
भ्रामरी	17/10/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	14:20:40	487:28:46	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	---
सूर्य			कन्या	20:59:53	00:59:12	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	सम राशि
चंद्र			मीन	03:15:34	13:54:31	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
मंगल			वृष	28:13:37	00:16:27	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	सम राशि
बुध			कन्या	03:04:53	00:56:57	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	शनि	उच्च राशि
गुरु	व		मीन	07:59:16	00:07:36	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	स्वराशि
शुक्र		अ	कन्या	17:15:10	01:14:57	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	नीच राशि
शनि	व		मक	24:35:52	00:01:28	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	स्वराशि
राहु	व		मेष	19:24:26	00:04:17	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	19:24:26	00:04:17	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	सम राशि
हर्ष	व		मेष	23:57:49	00:01:57	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	शनि	---
नेप	व		कुंभ	29:16:44	00:01:30	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	सूर्य	---
प्लूटो	व		मक	01:56:40	00:00:01	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	---
दशम भाव			धनु	11:35:39	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:10:18

लग्न-चलित

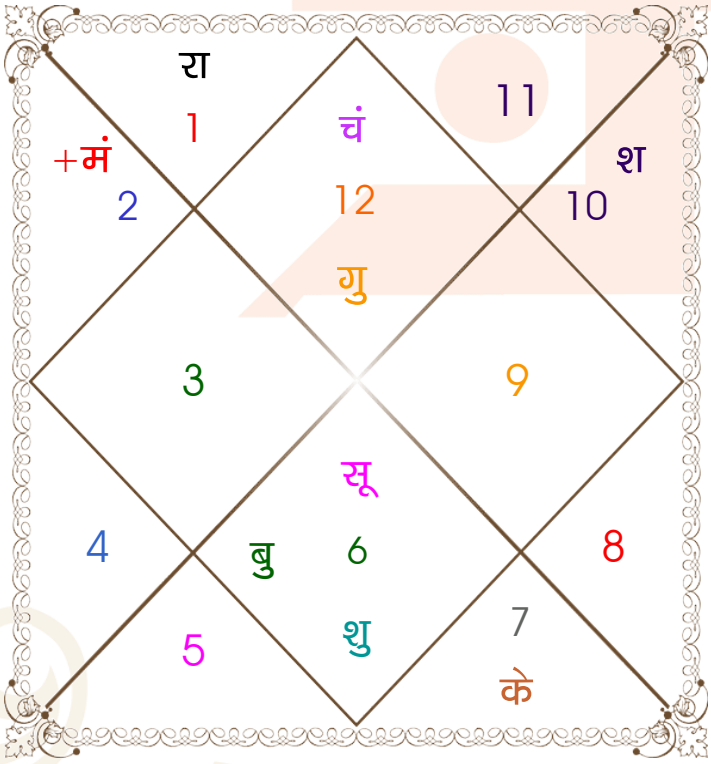

चन्द्र कुंडली

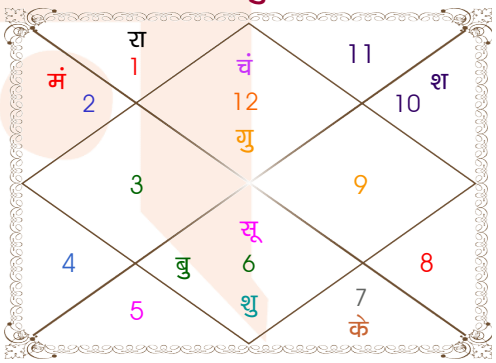

नवमांश कुंडली

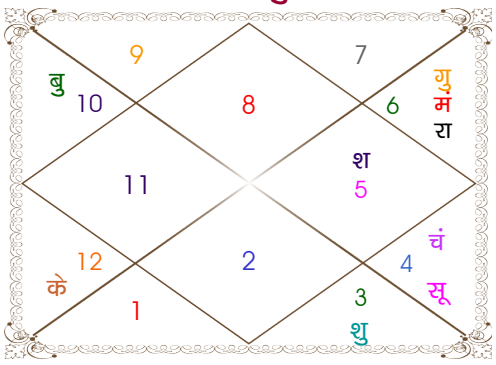

Marg Darshan jyotish kendra

Jora kothi shiv mandir karnibagh B.Deoghar Jharkhand 814143

9955755576/8002006599

ashutoshpandey698@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	28:53:10	मीन	14:20:40
2	मीन	28:53:10	मेष	13:25:40
3	मेष	27:58:09	वृष	12:30:39
4	वृष	27:03:09	मिथुन	11:35:39
5	मिथुन	27:03:09	कर्क	12:30:39
6	कर्क	27:58:09	सिंह	13:25:40
7	सिंह	28:53:10	कन्या	14:20:40
8	कन्या	28:53:10	तुला	13:25:40
9	तुला	27:58:09	वृश्चिक	12:30:39
10	वृश्चिक	27:03:09	धनु	11:35:39
11	धनु	27:03:09	मकर	12:30:39
12	मकर	27:58:09	कुम्भ	13:25:40

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	14:20:40
2	मेष	19:33:48
3	वृष	17:13:05
4	मिथुन	11:35:39
5	कर्क	06:42:50
6	सिंह	06:36:02
7	कन्या	14:20:40
8	तुला	19:33:48
9	वृश्चिक	17:13:05
10	धनु	11:35:39
11	मकर	06:42:50
12	कुम्भ	06:36:02

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

चलित कुंडली

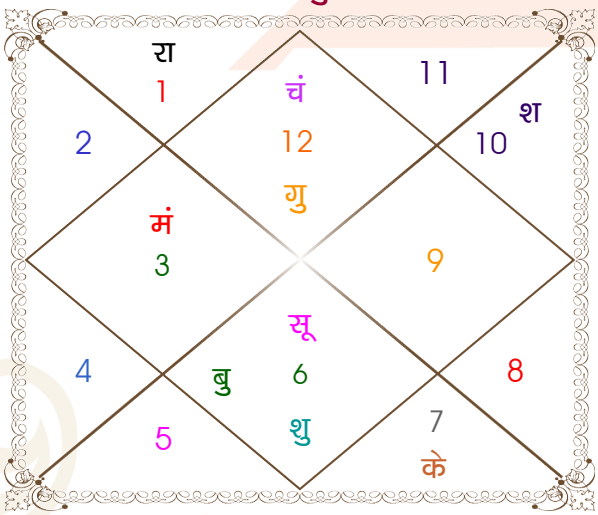

भाव कुंडली

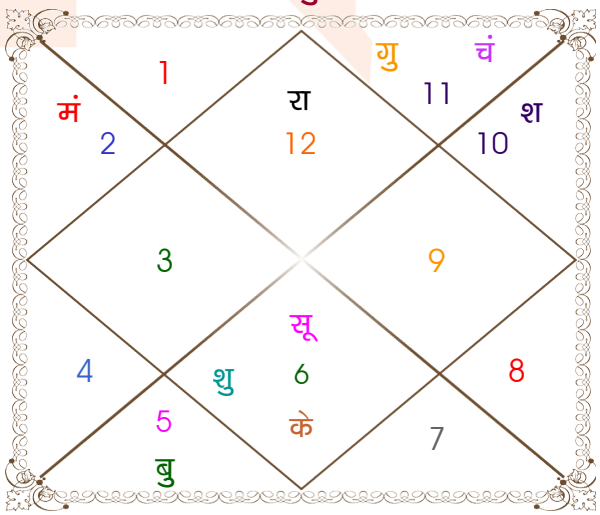

Marg Darshan jyotish kendra
Jora kothi shiv mandir karnibagh B.Deoghar Jharkhand 814143
9955755576/8002006599
ashutoshpandey698@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 0 वर्ष 1 मास 2 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
08/10/2022		10/11/2022		09/11/2041		10/11/2058		09/11/2065	
10/11/2022		09/11/2041		10/11/2058		09/11/2065		09/11/2085	
	00/00/0000	शनि	12/11/2025	बुध	07/04/2044	केतु	08/04/2059	शुक्र	11/03/2069
	00/00/0000	बुध	23/07/2028	केतु	04/04/2045	शुक्र	07/06/2060	सूर्य	11/03/2070
	00/00/0000	केतु	31/08/2029	शुक्र	03/02/2048	सूर्य	13/10/2060	चंद्र	10/11/2071
	00/00/0000	शुक्र	31/10/2032	सूर्य	10/12/2048	चंद्र	14/05/2061	मंगल	09/01/2073
	00/00/0000	सूर्य	13/10/2033	चंद्र	11/05/2050	मंगल	10/10/2061	राहु	10/01/2076
	00/00/0000	चंद्र	14/05/2035	मंगल	08/05/2051	राहु	28/10/2062	गुरु	10/09/2078
	00/00/0000	मंगल	22/06/2036	राहु	25/11/2053	गुरु	04/10/2063	शनि	09/11/2081
	08/10/2022	राहु	29/04/2039	गुरु	02/03/2056	शनि	12/11/2064	बुध	09/09/2084
राहु	10/11/2022	गुरु	09/11/2041	शनि	10/11/2058	बुध	09/11/2065	केतु	09/11/2085

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
09/11/2085		10/11/2091		10/11/2101		10/11/2108		11/11/2126	
10/11/2091		10/11/2101		10/11/2108		11/11/2126		09/10/2142	
सूर्य	27/02/2086	चंद्र	09/09/2092	मंगल	09/04/2102	राहु	24/07/2111	गुरु	29/12/2128
चंद्र	29/08/2086	मंगल	10/04/2093	राहु	27/04/2103	गुरु	17/12/2113	शनि	12/07/2131
मंगल	03/01/2087	राहु	10/10/2094	गुरु	02/04/2104	शनि	23/10/2116	बुध	17/10/2133
राहु	28/11/2087	गुरु	09/02/2096	शनि	12/05/2105	बुध	12/05/2119	केतु	23/09/2134
गुरु	15/09/2088	शनि	10/09/2097	बुध	09/05/2106	केतु	30/05/2120	शुक्र	24/05/2137
शनि	28/08/2089	बुध	09/02/2099	केतु	05/10/2106	शुक्र	31/05/2123	सूर्य	12/03/2138
बुध	05/07/2090	केतु	10/09/2099	शुक्र	05/12/2107	सूर्य	23/04/2124	चंद्र	12/07/2139
केतु	10/11/2090	शुक्र	12/05/2101	सूर्य	11/04/2108	चंद्र	23/10/2125	मंगल	17/06/2140
शुक्र	10/11/2091	सूर्य	10/11/2101	चंद्र	10/11/2108	मंगल	11/11/2126	राहु	09/10/2142

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 0 वर्ष 1 मा 2 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
10/11/2022		12/11/2025		23/07/2028		31/08/2029		31/10/2032	
12/11/2025		23/07/2028		31/08/2029		31/10/2032		13/10/2033	
शनि	03/05/2023	बुध	01/04/2026	केतु	15/08/2028	शुक्र	12/03/2030	सूर्य	17/11/2032
बुध	05/10/2023	केतु	28/05/2026	शुक्र	22/10/2028	सूर्य	09/05/2030	चंद्र	16/12/2032
केतु	08/12/2023	शुक्र	08/11/2026	सूर्य	11/11/2028	चंद्र	13/08/2030	मंगल	06/01/2033
शुक्र	09/06/2024	सूर्य	27/12/2026	चंद्र	15/12/2028	मंगल	20/10/2030	राहु	27/02/2033
सूर्य	02/08/2024	चंद्र	19/03/2027	मंगल	07/01/2029	राहु	11/04/2031	गुरु	14/04/2033
चंद्र	02/11/2024	मंगल	15/05/2027	राहु	09/03/2029	गुरु	13/09/2031	शनि	08/06/2033
मंगल	05/01/2025	राहु	10/10/2027	गुरु	02/05/2029	शनि	14/03/2032	बुध	27/07/2033
राहु	19/06/2025	गुरु	18/02/2028	शनि	05/07/2029	बुध	25/08/2032	केतु	16/08/2033
गुरु	12/11/2025	शनि	23/07/2028	बुध	31/08/2029	केतु	31/10/2032	शुक्र	13/10/2033

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
13/10/2033		14/05/2035		22/06/2036		29/04/2039		09/11/2041	
14/05/2035		22/06/2036		29/04/2039		09/11/2041		07/04/2044	
चंद्र	30/11/2033	मंगल	07/06/2035	राहु	25/11/2036	गुरु	30/08/2039	बुध	14/03/2042
मंगल	03/01/2034	राहु	07/08/2035	गुरु	13/04/2037	शनि	24/01/2040	केतु	04/05/2042
राहु	31/03/2034	गुरु	30/09/2035	शनि	25/09/2037	बुध	03/06/2040	शुक्र	28/09/2042
गुरु	16/06/2034	शनि	03/12/2035	बुध	19/02/2038	केतु	27/07/2040	सूर्य	11/11/2042
शनि	15/09/2034	बुध	29/01/2036	केतु	21/04/2038	शुक्र	28/12/2040	चंद्र	23/01/2043
बुध	06/12/2034	केतु	22/02/2036	शुक्र	12/10/2038	सूर्य	13/02/2041	मंगल	16/03/2043
केतु	09/01/2035	शुक्र	29/04/2036	सूर्य	03/12/2038	चंद्र	01/05/2041	राहु	25/07/2043
शुक्र	15/04/2035	सूर्य	19/05/2036	चंद्र	27/02/2039	मंगल	24/06/2041	गुरु	20/11/2043
सूर्य	14/05/2035	चंद्र	22/06/2036	मंगल	29/04/2039	राहु	09/11/2041	शनि	07/04/2044

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
07/04/2044		04/04/2045		03/02/2048		10/12/2048		11/05/2050	
04/04/2045		03/02/2048		10/12/2048		11/05/2050		08/05/2051	
केतु	28/04/2044	शुक्र	24/09/2045	सूर्य	19/02/2048	चंद्र	22/01/2049	मंगल	01/06/2050
शुक्र	28/06/2044	सूर्य	14/11/2045	चंद्र	16/03/2048	मंगल	21/02/2049	राहु	25/07/2050
सूर्य	16/07/2044	चंद्र	09/02/2046	मंगल	03/04/2048	राहु	10/05/2049	गुरु	12/09/2050
चंद्र	15/08/2044	मंगल	10/04/2046	राहु	19/05/2048	गुरु	17/07/2049	शनि	08/11/2050
मंगल	05/09/2044	राहु	12/09/2046	गुरु	30/06/2048	शनि	07/10/2049	बुध	29/12/2050
राहु	29/10/2044	गुरु	28/01/2047	शनि	18/08/2048	बुध	20/12/2049	केतु	20/01/2051
गुरु	17/12/2044	शनि	11/07/2047	बुध	01/10/2048	केतु	19/01/2050	शुक्र	21/03/2051
शनि	12/02/2045	बुध	05/12/2047	केतु	19/10/2048	शुक्र	15/04/2050	सूर्य	08/04/2051
बुध	04/04/2045	केतु	03/02/2048	शुक्र	10/12/2048	सूर्य	11/05/2050	चंद्र	08/05/2051

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 2, 8, 6
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	91%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	84%	पराक्रम, धन, भाग्योदय
पन्ना	बुध	58%	दम्पति, सुख
गोमेद	राहु	55%	धन, पराक्रम
नीलम	शनि	54%	धनार्जन, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	28%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	22%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट
हीरा	शुक्र	0%	दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि, दुर्घटना

रत्न की शुभता

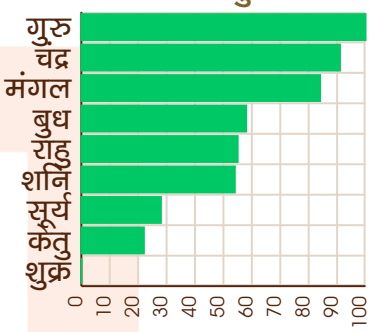

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	10/11/2022	41%	97%	91%	41%	100%	0%	54%	55%	22%
शनि	09/11/2041	3%	78%	72%	64%	100%	0%	67%	61%	0%
बुध	10/11/2058	41%	78%	84%	70%	100%	0%	54%	55%	22%
केतु	09/11/2065	3%	78%	91%	58%	100%	0%	34%	34%	47%
शुक्र	09/11/2085	3%	78%	84%	64%	100%	0%	61%	61%	34%
सूर्य	10/11/2091	52%	97%	91%	58%	100%	0%	34%	34%	0%
चंद्र	10/11/2101	41%	100%	84%	64%	100%	0%	54%	34%	0%
मंगल	10/11/2108	41%	97%	97%	41%	100%	0%	54%	34%	34%
राहु	11/11/2126	3%	78%	72%	58%	100%	0%	61%	67%	0%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	17/01/2023-29/03/2025	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है अतः तृतीय भाव में मंगल की स्थिति शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्य कलापों को आप निर्भय होकर सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको समय समय पर इच्छित सफलता प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आवश्यक सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी तथा अपने परिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी इसके प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी। साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी परन्तु पित गर्मी अथवा रक्त विकार संबंधी किसी परेशानी से शारीरिक कष्ट हो सकता है। नवम भाव पर सप्तमस्थ दृष्टि से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म करने पर ही आप अधिक विश्वास करेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगे। लेकिन पिता के स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे सम्मानीय पुरुष होंगे तथा अन्य जनों से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगे।

पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा जिससे आप उत्साह पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ॐ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(10/11/2022 - 09/11/2041)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपके जीवन में यह 10/11/2022 को आरम्भ और 09/11/2041 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 11वें भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो अधिकांश लोगों में आतंक उत्पन्न करता है। हर क्षेत्र में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करना इसकी प्रवृत्ति है। यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 11वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि प्रथम, पंचम तथा अष्टम भावों पर है और यह उनके कार्य को सम्पादित कर रहा है। 11वा भाव, जिसमें यह स्थित है, मित्र, समुदाय, महत्त्वाकांक्षाओं, कामनाओं तथा उनकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, लाभ, खुशहाली, बड़े भाई, भाग्योदय आदि का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी 11वें भाव में स्थित है और अपने भाव अर्थात् कामनाओं इच्छाओं की पूर्ति के भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको किसी गम्भीर बीमारी अथवा दुर्घटना नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि की वर्तमानों दशा में आपकी इच्छाओं की पूर्ति, लाभ और धन का संग्रह होगा। आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा और जीवन के हर क्षेत्र में लाभ मिलेगा। किन्तु, आपके लक्ष्यों की पूर्ति में बाधाएं भी उत्पन्न करेगा जिन पर आप अपने भाइयों तथा मित्रों की सहायता से विजय प्राप्त करेंगे।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सफल होंगे और सरकारी स्रोतों से धन का उपार्जन करेंगे। आपके राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने की अच्छी सम्भावना है जहाँ आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और पारिवारिक सुख-आनन्द का लाभ उठाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्च कम होंगे जो आज्ञाकारी होंगे और आपका आदर करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा के लिए यह दशा अनुकूल है। आप अपनी शिक्षा सफलता पूर्वक पूरी करेंगे और साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेंगे।

अंर्तदशा :- शनि - शनि
(10/11/2022 - 12/11/2025)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/11/2022 को प्रारंभ होकर 09/11/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 10/11/2022 को प्रारंभ होकर 12/11/2025 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शनि शक्तिशाली ग्रह है। इसे यद्यपि अशुभ समझा जाता है, परंतु यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह शुभ फल में देरी तो करता है, परंतु फल मिलता अवश्य है। एकादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 1, 5, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके अधीनस्थ बहुत से कर्मचारी काम कर सकते हैं। सरकार के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। आप आमोद-प्रमोद के शौकीन हैं, लेकिन इस अवधि में आपके मित्रों की संख्या में कमी आ सकती है। स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।
- पीपल को जल दें।

अंर्तदशा :- शनि - बुध
(12/11/2025 - 23/07/2028)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 10/11/2022 को प्रारंभ होकर 09/11/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 12/11/2025 को प्रारंभ होकर 23/07/2028 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। सप्तम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के प्रथम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विभिन्न विषयों का ज्ञानार्जन करेंगे, धार्मिक बनेंगे। व्यक्तित्व और शरीर प्रभावशाली होंगे। वेशभूषा उत्तम होगी। जरुरत से अधिक चालाकी से बचाव करना उत्तम रहेगा। ज्ञान के दुरुपयोग से भी बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - केतु
(23/07/2028 - 31/08/2029)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/11/2022 को प्रारंभ होकर 09/11/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 23/07/2028 को प्रारंभ होकर 31/08/2029 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। अष्टम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धन और स्त्रियों के पीछे भागते रहेंगे। संयम के अभाव के कारण मूत्र तंत्र की कोई व्याधि हो सकती है। जीवन में सावधानी और नियंत्रण अपनाना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - शुक्र
(31/08/2029 - 31/10/2032)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/11/2022 को प्रारंभ होकर 09/11/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 31/08/2029 को प्रारंभ होकर 31/10/2032 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा, शिष्ट व्यवहार होगा। आमोद-प्रमोद में मन लगेगा। लोकप्रिय होंगे, विशेषकर विपरीत लिंग के व्यक्ति आपकी ओर आकर्षित होंगे। उनसे आवश्यकता से अधिक प्रगाढ़ता न बढ़ाएं, अन्यथा कोई व्याधि हो सकती है। विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ व्यापार में साझेदारी करने से लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।